शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अक्टूबर 2026
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

उर्मिला शिरीष के कथा साहित्य में नारी संवेदना के विविध स्वर

अदिति सिंह पंवार (शोधार्थी)
हिन्दी विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय
उदयपुर, राजस्थान, भारत
डॉ. संध्या दुबे (शोध निर्देशक)
आचार्य
राजकीय स्नात्तकोत्तर महाविद्यालय
सिरोही, राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

हिन्दी कथा साहित्य में उर्मिला शिरीष की रचनात्मक उपस्थिति नारी संवेदना की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण मानी जाती है। उनकी रचनाओं में नारी केवल त्याग की प्रतिमूर्ति नहीं है बल्कि वह अपने अस्तित्व, अस्मिता, स्वाभिमान और स्वतंत्र व्यक्तित्व के प्रति संघर्षशील तथा सजग चेतना का प्रतिनिधित्व करती है। उर्मिला शिरीष का कथा साहित्य नारी संवेदनाओं का एक सशक्त दस्तावेज है, जो पाठक के मन को गहराई तक प्रभावित करता है। उनका साहित्य मातृत्व, करुणा, प्रतिशोध और प्रेम जैसे आयामों का अद्भुत संगम है। नारी के अन्तर्मन को छूने और पकड़ने की अनुपम क्षमता उर्मिला जी में निहित है। उर्मिला शिरीष का व्यक्तित्व एक रवि किरण जैसा है जिसका छोर-छोर ज्ञान के प्रकाश से प्रस्फुटित होता हुआ दिखायी देता है। उर्मिला जी का साहित्य नारी संवेदनाओं का कोष है, जो परंपरा आधुनिकता का संतुलन साधता है। यह अध्ययन नारीवाद के दृष्टिकोण से उर्मिला शिरीष की कथा संवेदना को समझने का प्रयास है, जिससे हिंदी कथा साहित्य में स्त्री के स्वर को बेहतर ढंग से पहचाना जा सके।

बीज शब्द : *नारी संवेदना, कथा साहित्य, स्त्री विमर्श, चेतना*

प्रस्तावना

साहित्य मानव और समाज को सुन्दर, समुन्न्त एवं श्रेष्ठ बनाने की साधना है। श्रेष्ठ तथा उत्कृष्ट साहित्य मानव समाज को एक नई दिशा प्रदान करता है। बदलते परिवेश के साथ नित नूतन कल्पनाओं और विविधताओं को लेकर वर्तमान समय में महिला लेखिकाओं ने साहित्य की श्रीवृद्धि की है। हिन्दी साहित्य को सशक्त बनाने वाली लेखिकाओं में उर्मिला शिरीष का नाम अग्रगण्य है। उर्मिला जी एक संवेदनशील लेखिका हैं, जिनके कथा साहित्य में मानवीय संवेदनाएँनारी केंद्रित भावनाओं के माध्यम से गहराई से उभरती है। उन्होंने जीवन के साधारण प्रसंगों में निहित असाधारण भावनाओं को अत्यंत सहजता और आत्मीयता के साथ अभिव्यक्त किया है।

उर्मिला जी की नारी संवेदना का प्रमुख पक्ष नारी के मनोवैज्ञानिक संसार का सूक्ष्म चित्रण है। वे स्त्री के मौन को भी भाषा प्रदान करती है और उसके भीतर चल रहे भावनात्मक संघर्ष को प्रभावशाली ढंग से

अभिव्यक्त करती हैं। उर्मिला शिरीष के नारी पात्र पुरातन से चली आ रही आदर्श प्रवृत्ति 'पुरुषों के अधीन रहना' को उखाड़फेंकते है। उनकी कहानियाँ आधुनिक नारी की पहचान' उसकी अस्मिता और स्वाभिमान की गूंज बनकर पाठकों के हृदय को स्पर्श करती है। यह शोध आलेख उर्मिला शिरीष के कथा साहित्य में निहित नारी संवेदना के विविध स्वरों का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत करता है।

नारी संवेदना की अवधारणा

नारी समस्त मानवीय सौन्दर्य एवं चेतना की सर्वोत्तम अभिव्यक्ति है। साहित्य की प्रत्येक विधा में नारी शक्ति एवं जीवन प्रदायिनी ऊष्मा सक्रिय रही है। महादेवी वर्मा का कथन है कि ''नारी का मानसिक विकास पुरुष के मानसिक विकास से अधिक द्रुतगति से होता है। उसका स्वभाव कोमल और प्रेम, घृणा आदि भाव अधिक तीव्र और स्थायी होते हैं। इन दोनों प्रवृत्तियों में उतना ही अंतर है जितना विद्युत और झड़ी में। एक से शक्ति उत्पन्न की जा सकती है किन्तु प्यास नहीं बुझाई जा सकती। दूसरी से शान्ति मिलती है परंतु पशुबल की उत्पत्ति संभव नहीं।''**1** छायावादी कविवर सुमित्रानंदन पंत ने भी नारी को देवी, माँ, सहचरी, प्राण से संबोधित कर प्रतिष्ठित किया है।

साहित्य में संवेदना का महत्त्वपूर्ण स्थान है। साहित्यिक कृति साहित्यकार की संवेदना का ही प्रतिरूप होती है। संवेदना से अभिप्राय वह अनुभूति प्रवणता है जो अतिसूक्ष्म भावों को ग्रहण करने की क्षमता रखता है। मनुष्य एक जीवधारी होने के साथ-साथ बुद्धि सम्पन्न प्राणी भी है। राम मनोहर त्रिपाठी जी मनुष्य की संवेदना पर लिखते है ''उसकी संवेदना जैविक धरातल पर ही न रहकर मन-बुद्धि की भूमि पर सक्रिय होती है, जिससे उसका स्वरूप जैविक संवेदना से अधिक विशिष्ट हो जाता है। मनुष्य की संवेदना इस भूमि पर पहुँचकर मात्र प्रतिक्रियात्मक न होकर चिंतन से भी जुड़ती है'।**2**

'नारी संवेदना' शब्द 'संवेदना' के मूल अर्थ को वहन करते हुए उसे थोड़ा संक्षिप्त कर देता है। जैसे कि यहाँ संवेदना अन्य सभी विधाओं से हटकर केवल नारी पर ही केन्द्रित है। नारी के अन्तर्मन की अनुभूतियाँ तथा उन अनुभूतियों के गहनतम रूप को ही नारी संवेदना का मूल आशय माना जा सकता है।

उर्मिला शिरीष की नारी संवेदना भारतीय सामाजिक यथार्थ से गहराई से जुड़ी है। वे परिवार, समाज, शिक्षा, आर्थिक निर्भरता, लैंगिक असमानता, दांपत्य संबंध, मातृत्व, अकेलापन तथा बदलते सामाजिक मूल्यों के बीच नारी की मनः स्थितियों का अत्यंत सूक्ष्म चित्रण करती है। नारी संवेदना उनके कथा साहित्य का मूल स्वर है। डॉ. शिरीष के समस्त कहानी संग्रहों में नारी की वेदना व संवेदना झलकती है।

नारी जीवन की अनुभूति और संघर्ष के विविध स्वर

''उर्मिला शिरीष हिन्दी कथा साहित्य की अनन्य अधिवक्ता हैं, जिन्होंने समाज तथा घर परिवार की स्त्रियों पर हो रहे अन्याय, शोषण, दमन तथा व्यभिचार के खिलाफ आवाज बुलंद की है। मनुष्य हित में वे सत्य, निष्ठा और नये आदर्श की स्थापना में सहयोगी हैं।''**3** उर्मिला शिरीष की कहानियाँ एवं उपन्यास नारी के मानसिक द्वंद्व, नारी जीवन की जटिलताओं तथा भावनात्मक उलझनों को गहराई से उकेरते हैं। उर्मिला शिरीष के नारी पात्रों में अस्तित्व बोध और अस्मिता चेतना का स्वर विशेष रूप से उभरता है। वे परंपरागत भूमिकाओं और सामाजिक अपेक्षाओं के मध्य अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व की तलाश करती दिखाई

देती हैं। उनकी संवेदना में आत्मस्वीकृति, आत्मसम्मान और आत्मनिर्णय की आकांक्षा अंतर्निहित है। इस प्रक्रिया में नारी का अंतर्मन केवल पीड़ा का संवाहक न रहकर अपनी परिस्थितियों के प्रति सजग प्रतिपक्ष का निर्माण करता है। यही तत्व उनकी नारी संवेदना को निष्क्रिय करुणा से सक्रिय आत्मचेतना की ओर उन्मुख करता है।

उर्मिला जी की 'शहर में अकेली लड़की' कहानी नायिका के संघर्ष की कहानी है। नायिका अपनी दीदी पर पति के जुल्म का विरोध करती है, अदालत का दरवाजा खटखटाती है- ''वह जानती है अपनी परेशानियाँ। परिवार की विषम कठिनाईयाँ। दीदी कहाँ जायेगी। एक क्षत-विक्षत मन मस्तिष्क को सामान्य बनाना शब्दों का करिश्मा मात्र नहीं है।''**4** वह उलझनों से जूझती है और अंत में मुक्ति का रास्ता ढूँढ निकालने में सफल होती है।

'उसका अपना रास्ता' कहानी की नायिका 'वृंदा' मिस वर्ल्ड बनने की अदम्य आकांक्षा को असफलताओं में अस्त होते देखती है। एक मध्यवर्गीय हमेशा अभावों से ग्रस्तता का बोध करता हुआ आगे बढ़ने की, उच्चवर्गीय होने की चाहत रखता है। वृंदा कहानी में यह जान जाती है कि ''स्त्री की मुक्ति लाखों में एक बनने में नहीं, बल्कि लाखों मे से एक बनना एक साथ सबकी मुक्ति का रास्ता है।''**5**

सामूहिक बलात्कार पर केंद्रित कहानी 'चीख' पर उर्मिला जी भी 'चीख' के हवाले से लिखती हैं, ''चीख कहानी लिखने के पीछे गहरी पीड़ा थी, सवाल थे कि अंततः बलात्कार पीड़िता लड़की या महिला को ही दोषी क्यों माना जाता है ? समाज, परिवार और स्वयं पीड़िता अपराध बोध, आत्मग्लानि से क्यों भरी होती है और कानून असली अपराधियों को क्यों इतनी आसानी से छोड़ देता है।''**6** उर्मिला जी की यह रचना दिमाग में प्रश्नो और विचारों का बवंडर खड़ा कर देती है।

उर्मिला जी की 'कोशिश' कहानी की राशि को संतान ने होने की वजह से मानसिक दुःख होता है। पति रवि समाज की नज़रों में अपनी कमी को छिपाने के लिए कृत्रिम गर्भाधान के लिए राशि को बहुत कोशिशों के बाद मनाता है। पति रवि द्वारा इलाज के लिए मजबूर करने की यह प्रवृत्ति राशि को अधिक मानसिक संघर्ष में डाल देता है। स्त्री की घुटनभरी जिंदगी को उर्मिला शिरीष ने अनावृत्त किया है। 'प्रतिरोध' कहानी एक ऐसी मध्यवर्गीय कामकाजी नारी की कहानी है, जो कॉलेज में अध्यापक के पद पर कार्यरत है। नायिका कामिनी लड़को के कॉलेज में ट्रांसफर होकर आती है। कॉलेज के लड़के कामिनी के साथ अच्छा व्यवहार नहीं करते, लेकिन कामिनी हार नहीं मानती, कड़ी मेहनत उसका उद्देश्य है। वह कहती है- ''संघर्ष करने की क्षमता, साहस और आत्मशक्ति मुझमें है। मैं ही अगर इतनी कमजोर हो जाऊँगी, तो अपने विद्यार्थियों को क्या दूँगी।''**7** उर्मिला जी ने नारी की कर्मठता और आत्मविश्वास का यहाँ बखूबी चित्रण किया है।

उर्मिला शिरीष का उपन्यास 'चाँद गवाह' यह सच बड़ी बारीकी से खोलता है कि एक व्यक्ति के लिए जो जीवन का असल यथार्थ होता है, वहीं दूसरों के लिए कैसे भ्रम में तब्दील हो जाता है ? नारी इच्छा और स्वातंत्र्य को दो पीढ़ियों के बीच उकेरती इस उपन्यास की कथा नारी मन से देह तक का सफर बड़े करीने से तय करती हैं। प्रश्न उठाती है कि देह के सम्बन्धों से कैसे बड़े होते हैं आत्मा के रिश्ते। स्मृतियों में जगह बना लेने वाली एक अनूठी कृति है 'चाँद गवाह'।

''स्त्री ने सुना,

स्त्री ने गाया।
और एक साथ
तमाम स्त्रियाँ महक उठीं।
नाचने लगीं,
हँसने और
खिलखिलाने लगीं।
क्योंकि इनमें
पृथ्वी की तमाम
स्त्रियों के समवेत स्वर थे।''**8**

उर्मिला शिरीष की नारी संवेदना की विशिष्टता यह है कि उसमें करुणा और प्रतिरोध, परंपरा और परिवर्तन, संबंध और स्वायत्तता के बीच निरंतर अंतद्र्वंद्व दिखाई देता है। उर्मिला जी नारी के अनुभव जगत को व्यापक मानवीय संदर्भ में प्रस्तुत करती हैं। परिणामस्वरूप उनकी रचनाओं में नारी संवेदना केवल अधिकारों की उद्घोषणा न होकर नारी के जीवनानुभवों, आत्मसम्मान और मानवीय गरिमा की पुनस्र्थापना का संवेदनात्मक आख्यान बन जाता है।

उर्मिला शिरीष की नारी संवेदना में नारी के संघर्ष और प्रतिरोध का स्वर भी उल्लेखनीय है। यह प्रतिरोध प्रायः आक्रामकता के रूप में अभिव्यक्त न होकर आत्मचेतना, प्रश्नाकुलता और अपने अस्तित्व के प्रति सजगता के रूप में अभिव्यक्त होता है। उनकी नारी परिस्थितियों से टकराते हुए अपने भीतर ऐसी चेतना विकसित करती है, जो उसे अन्यायपूर्ण या असमान स्थितियों पर विचार करने के लिए प्रेरित करती है। इस दृष्टि से उनका कथा साहित्य नारी के भीतर विकसित हो रही परिवर्तनशील चेतना का रचनात्मक दस्तावेज कहा जा सकता है।

निष्कर्ष

महिला लेखन में उर्मिला शिरीष एक ऐसी शख्सियत हैं, जिनकी अपनी एक अलग पहचान है। मानव जीवन की छोटी सी छोटी घटना को संवेदना के स्तर पर ग्रहण कर उसे कहानी की शक्ल देने में सिद्धहस्त उर्मिला जी हिंदी साहित्य जगत की जानी मानी लेखिका है। उर्मिला शिरीष ने नारी मन की पीड़ा को बहुत करीब से महसूस किया है। समकालीन कथा साहित्य के संदर्भ में की गयी कोई भी चर्चा तब तक अधूरी मानी जाएगी, जब तक कि उसमें उर्मिला शिरीष के कृतित्व को सम्मिलित न किया जाए। उर्मिला जी के कृतित्व का महत्त्वपूर्ण पहलू है नारी संवेदना। उर्मिला शिरीष के कथा साहित्य में नारी संवेदना का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष स्त्री अस्मिता और आत्मबोध है। उनकी स्त्री पात्रों के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि नारी का अस्तित्व केवल पारिवारिक भूमिकाओं अथवा सामाजिक दायित्वों से निर्धारित नहीं किया जा सकता। उसके अपने स्वप्न, इच्छाएँ, आकांक्षाएँ और निर्णय भी उसके व्यक्तित्व के अनिवार्य अंग है। नारी की आत्मचेतना यहाँ किसी बाहरी आरोपित विचार का परिणाम न होकर उसके जीवनानुभवों से विकसित होने वाली आंतरिक चेतना के रूप में उभरती है।

समग्रतः कहा जा सकता है कि उर्मिला शिरीष के कथा साहित्य में नारी संवेदना करुणा से चेतना, चेतना से आत्मबोध और आत्मबोध से प्रतिरोध एवं आत्मनिष्ठा की ओर अग्रसर होती हुई दिखायी देती है।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अक्टूबर 2026
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

उनकी रचनाओं में नारी जीवन का यथार्थ निजी अनुभूतियों, सामाजिक संरचनाओं और सांस्कृतिक मान्यताओं के अंतः संबंधों के साथ उद्घाटित हुआ है। इस प्रकार उनका कथा साहित्य समकालीन हिंदी कथा परंपरा में नारी अस्तित्व के जटिल प्रश्नों, बदलती चेतना और मानवीय गरिमा की आकांक्षा को अभिव्यक्त करने वाला महत्त्वपूर्ण रचनात्मकअवदान सिद्ध होता है। नारी संवेदना के विविध स्वरों का यह समन्वित रूप उर्मिला शिरीष की कथा दृष्टि की विशिष्टता तथा उनके साहित्य के सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रासंगिकता बोध को रेखांकित करता है।

संदर्भ ग्रन्थ

1 महादेवी वर्मा, श्रंखला की कड़ियाँ, पृष्ठ 12

2 राम मनोहर त्रिपाठी, हिंदी कविता : संवेदना और दृष्टि, पृष्ठ 38

3 हीरालाल नागर, उर्मिला शिरीष : सृजनात्मकता का आत्मिक उल्लास, पृष्ठ 8

4 उर्मिला शिरीष, शहर में अकेली लड़की, पृष्ठ 9

5 उर्मिला शिरीष, निर्वासन, पृष्ठ 144

6 अभिषेक सक्सेना 'ऋषि', चीख, पृष्ठ 9

7 उर्मिला शिरीष, सहमा हुआ कल, पृष्ठ 41

8 उर्मिला शिरीष, चाँद गवाह, पृष्ठ 7